श्रीराम कृष्ण गौशाला (दड़िबा) में विशेष कार्यक्रम

''धर्म का पहला सूत्र है किसी को दुःख नहीं देना''

– युवाचार्य श्री महाश्रमण

बीदासर (दड़िबा) 13 अप्रैल।

''अहिंसा धर्म शाश्वत है यह सदा रहा है और सदा रहेगा। अहिंसा है किसी प्राणी का वध मत करो। किसी प्राणी को जानबूझकर तकलीफ मत दो और अपने मन में अनुकंपा दया का भाव रखो कि मेरे द्वारा किसी को कष्ट न हो जाए। जो व्यवहार तुम्हारे लिए प्रतिकूल है, जो व्यवहार तुम्हें अच्छा नहीं लगता है वैसा व्यवहार तुम दूसरों के साथ मत करो।''

उक्त विचार युवाचार्यश्री महाश्रमणजी ने आज सोमवार को स्थानीय श्रीराम कृष्ण गौशाला में धर्मसभा को संबोधित करते हुए फरमाय।

आज की इस धर्मसभा में सभी समुदाय के लोगों ने बढ़चढ़कर भाग लिया तथा युवाचार्यप्रवर के आगमन पर भव्य स्वागत किया गया। युवाचार्य महाश्रमण के आगम पर सभी लोगों के चेहरे पर प्रसन्नता साफ झलक रही थी।

प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि धर्म का पहला सूत्र है किसी को दुःख नहीं देना, सबके प्रति मैत्री की भावना रखना। धर्म का दूसरा धर्म का सूत्र है – ईमानदारी। चाहे कोई भी व्यक्ति व्यापार करे या नौकरी करे वह अपने व्यापार व काम के प्रति ईमानदारी रखे। धोखाधड़ी गलत काम नहीं करना चाहिए। आज भौतिकवादी दुनिया में ईश्वर ही पैसा बना हुआ है। किंतु थोड़े पैसे के लिए ईमानदारी को नहीं खोएं। एक दूसरे को धोखा देना पाप है। गलत काम करते समय कोई दूसरा व्यक्ति देखे न देखे किंतु भगवान देखता है व्यक्ति के स्वयं की आत्मा जानती है कि पाप का फल भोगना होता है।

युवाचार्यश्री ने धर्म का तीसरा सूत्र नशे से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए फरमाया कि नशा मत करो। नशे से किसी को फायदा नहीं होता, नशे से नुकशान होता है। नशे से स्वास्थ्य खराब होता है और धन की बर्बादी के साथ–साथ घर–परिवार में समस्या भी पैदा होती है। धर्म की चौथी बात है – अध्यात्म साधना। व्यक्ति रात और दिन के चौबीस घंटों में कुछ समय अध्यात्म की साधना में लगाना चाहिए, जिससे व्यक्ति की आत्मा का कल्याण होता है।

युवाचार्यप्रवर आगे फरमाया कि गाय के प्रति लोगों में भावना है, क्योंकि गाय उपयोगी प्राणी है गाय से अनेक पदार्थ मिलते हैं, जिससे शरीर को संपोषण

मिलता है। आदमी की सेवा होती है किंतु पशु भी प्राणी है उनको भी सेवा चाहिए। समाज के लोग जो जानवरों की सेवा का ध्यान देते हैं जो एक अनुकंपा की भावना है। प्राणी की सेवा एक लोकधर्म है, प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना हो और मनुष्य यह सोचे कि मैं मनुष्य योनी में आया हूं, मनुष्य का जीवन मिला है तो इसका उपयोग करूं अपना जीवन सद्कार्यों में लगाऊं मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ माना गया है। साथ में मोक्ष की भावना जागे संत पुरुषों की संगत करें तो मनुष्य का जीवन कल्याणकारी बन सकता है।

युवाचार्यप्रवर ने 'श्रीराम कृष्ण गौशाला' के नाम का उल्लेख करते हुए फरमाया कि इस गौशाला में दो नाम है 'राम व कृष्ण'। गीता में में कृष्ण की जीवनी का वर्णन किया गया है, अगर श्रीमद् भागवद् गीता का ध्यान लगाकर अध्ययन किया जावे तो जीवन निश्चित रूप से सफल हो जाता है। गीता में एक जीवन जीने की कला मिलती है। जब राम का नाम आता है तो रामायण की चौपाईया याद आ जाती है। 'रा' के शब्द का उच्चारण करने से मुंह खुलता है और 'म' शब्द के उच्चारण से मुंह बंद होता है इसका तात्पर्य यह समझें कि जब 'रा' उच्चारण से मुंह खुलता है तो पाप बाहर निकलता है और 'म' के उच्चारण से जब मुंह बंद होता है कि पाप वापिस भीतर न जा सके। राम के नाम में बड़ा चमत्कार है, श्रद्धा से नाम लें तो जीवन का कल्याण हो जाता है।

प्रवचन के पश्चात दड़िबा के कई लोगों ने युवाचार्यश्री महाश्रमण के समक्ष उपस्थित होकर नशा नहीं करने का संकल्प लिया। संकल्प दिलाने के बाद युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि *''रघुकुल रीत सदा चली आई प्राण जाई पर वचन न जाई''* इसको ध्यान में रखते हुए भविष्य में संकल्प को याद रखें कि हमने संत के सामने नशे का त्याग किया है।

इस अवसर पर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष बाबूलाल सेखानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा बीदासर की ओर से श्रीरामकृष्ण गौशाला में 31 हजार रुपये व तेरापंथ महिला मण्डल की ओर से अध्यक्षा श्रीमती शांतिदेवी बांठिया ने 21 सौ रुपये की राशि भेंट की।

इसी क्रम में अनेक गौसेवा भावी लोगों ने आज इस समारोह के दौरान अपना–अपना आार्थिक सहयोग देने की घोषणा की।

प्रवचन के पश्चात युवाचार्यप्रवर श्रद्धालुओं के घरों में पगल्या कराते हुए पुनः तेरापंथ भवन पधारे।

– अशोक सियोल